भजन

तर्ज– मेरे मोहन तेरा मुस्कुराना

मखमूर निगाहों का जादू, भूल जाने के काबिल नहीं है
देते हैं लाड से कैसे दिलबर, वो बताने के काबिल नहीं है

1–कहना था कुछ जो कहने पे आये,खैंचा आंखों ने कुछकह न पाये
आंखों से जो निकलती हैं किरनें, हाय वो सहने के काबिल नहीं है

2–खेल साहिबी का अब तुम सम्भालो,मार डालेगा मुतलक ये हमको
हम इसी में गर्क हो चुके हैं, मुंह दिखाने के काबिल नहीं है

3–नूर नजरों पे आलम फिदा है, आंखों के खानों में क्या छिपा है
देख कर इनको और कुछ न देखें, आशिकों की तो आदत यहीं है

4–आंखों में रंग जो है गुलाबी, बंद करके इन्हीं में संभाले
इसी रंग में ही हम घुल रहे हैं, आपकी बस इनायत यहीं है

5–उनकी आंखें हैं सागर इश्क का, लाल डोरे हैं सागर की लहरें
डूबे हैं इनमें आशिक अर्श के, बाहर आने के काबिल नहीं है